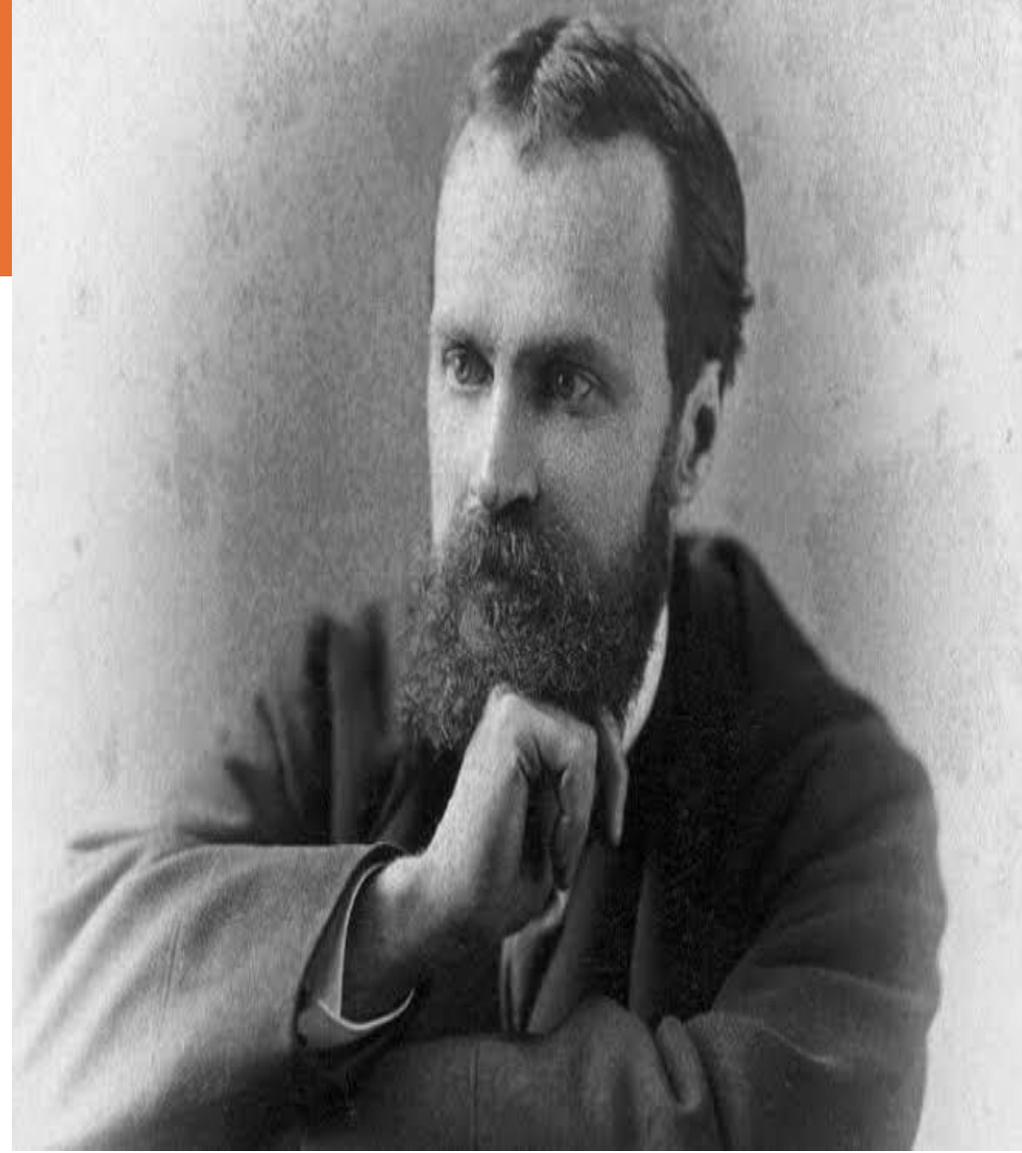


TDC PART 3, PAPER 5

25.02.2025

एक मनोविज्ञानी के रूप में
विलियम जेम्स के योगदानों का
वर्णन।



- 🎨 विलियम जेम्स: आधुनिक मनोविज्ञान के जनक
- 🟢 पूरा नाम: विलियम जेम्स (William James)
- 🟡 जन्म: 11 जनवरी 1842 (अमेरिका)
- 🟠 मृत्यु: 26 अगस्त 1910
- 🔴 मुख्य योगदान:
 - ✓ आधुनिक मनोविज्ञान के जनक
 - ✓ *Pragmatism* (व्यवहारवाद) के प्रवर्तक
 - ✓ चेतना की धारा (Stream of Consciousness) का सिद्धांत
 - ✓ *James-Lange Emotion Theory* के सह-निर्माता
 - ✓ धार्मिक अनुभवों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन
- 🟣 प्रमुख पुस्तकें:
 - 📖 *The Principles of Psychology* (1890)
 - 📖 *The Varieties of Religious Experience* (1902)
- ✨ उन्हें क्यों याद किया जाता है?
 - 💡 उन्होंने मनोविज्ञान को दर्शन से अलग कर स्वतंत्र विज्ञान बनाया।
 - 💡 उनका दृष्टिकोण अनुभववादी और व्यावहारिक था।
 - 💡 उनके सिद्धांत आज भी शोध और अध्ययन का आधार हैं।

• ✨ विलियम जेम्स के प्रमुख योगदान - सक्षेप

• 1. व्यवहारवाद (Pragmatism)

✓ किसी भी विचार की सच्चाई उसके व्यावहारिक परिणामों पर निर्भर करती है।

✓ ज्ञान का मूल्य इस बात से तय होता है कि वह कितना उपयोगी है।

• 2. चेतना की धारा (Stream of Consciousness)

✓ चेतना एक सतत प्रवाह है, जिसे अलग-अलग भागों में नहीं बांटा जा सकता।

✓ यह हर पल बदलती रहती है और निरंतर विकसित होती है।

• 3. जेम्स-लैंगे भावना सिद्धांत (James-Lange Theory of Emotion)

✓ "हम इसलिए डरते नहीं हैं क्योंकि हम कांपते हैं, बल्कि हम कांपते हैं इसलिए डरते हैं।"

✓ भावना शरीर की प्रतिक्रियाओं के कारण उत्पन्न होती है।

• 4. स्व-चेतना का सिद्धांत (Theory of Self-Consciousness)

✓ मनष्य का "स्व" (Self) तीन भागों में बंटा होता है:

1 भौतिक आत्म (Material Self) - शरीर, वस्त्र, संपत्ति आदि।

2 सामाजिक आत्म (Social Self) - समाज में हमारी पहचान।

3 आध्यात्मिक आत्म (Spiritual Self) - हमारा आंतरिक अनुभव और विश्वास।

• 5. धार्मिक अनुभवों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

✓ धार्मिक अनुभवों को व्यक्तिगत भावनाओं और मानसिक अवस्थाओं के रूप में देखा।

✓ इन्हें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया।

• 6. आदत का महत्व (Importance of Habit)

✓ आदतें हमारे व्यवहार और व्यक्तित्व को नियंत्रित करती हैं।

✓ सकारात्मक आदतें हमें सफल बना सकती हैं।

• 7. इच्छा और स्वतंत्रता का सिद्धांत (Theory of Will and Free Will)

✓ मानव की इच्छाशक्ति उसे अपने कार्यों और निर्णयों को नियंत्रित करने की स्वतंत्रता देती है।

✓ यह व्यवहारवादी दृष्टिकोण को मजबूत करता है।

• 8. सत्य का व्यावहारिक सिद्धांत (Practical Theory of Truth)

✓ सत्य को किसी विचार की स्थिरता और उपयोगिता के आधार पर परखा जाना चाहिए।

✓ यदि कोई विचार हमारे जीवन में कारगर है, तो वह सत्य है।

- 1. व्यवहारवाद (Pragmatism) 

-  मुख्य विचार:

-  ज्ञान और विचारों का मूल्य उनकी उपयोगिता पर निर्भर करता है।

-  किसी भी विचार या सिद्धांत की सच्चाई उसके व्यावहारिक परिणामों से जानी जाती है।

-  "जो काम करता है, वही सत्य है।"

-  उदाहरण:

-  शिक्षा: यदि कोई शिक्षण पद्धति छात्रों के प्रदर्शन को सुधारती है, तो वह सही मानी जाएगी।

-  स्वास्थ्य: कोई भी उपचार तभी अच्छा माना जाएगा यदि वह रोगी को ठीक करे।

-  व्यक्तिगत जीवन: यदि कोई आदत या सोच हमें खुश और सफल बनाती है, तो वह उपयोगी और सही

2. चेतना की धारा (Stream of Consciousness)

-  मुख्य विचार:
 -  चेतना एक निरंतर प्रवाह की तरह होती है, जिसे अलग-अलग हिस्सों में नहीं बांटा जा सकता।
 -  हमारी सोच कभी भी स्थिर नहीं रहती, यह लगातार बदलती रहती है।
 -  प्रत्येक व्यक्ति की चेतना का प्रवाह अद्वितीय होता है।
-  उदाहरण:
 -  विद्यार्थी: किताब पढ़ते समय परीक्षा की चिंता आना, फिर ब्रेक लेने का विचार आना।
 -  लेखक: कहानी लिखते समय अतीत के अनुभव, कल्पना और वर्तमान भावनाओं का मिश्रण।

• 3. जेम्स-लैंगे भावना सिद्धांत (James-Lange Theory of Emotion)

• मुख्य विचार:

 "हम इसलिए डरते नहीं हैं क्योंकि हम कांपते हैं, बल्कि हम कांपते हैं इसलिए डरते हैं।"

 भावना शरीर की प्रतिक्रियाओं के कारण उत्पन्न होती है।

• उदाहरण:

 डर: जंगल में शेर देखकर पहले शरीर कांपता है, फिर डर महसूस होता है।

 खुशी: जब हमें मुस्कुराते हैं, तो हमें खुशी महसूस होती है।

• 4. स्व-चेतना का सिद्धांत (Theory of Self-Consciousness) 🧠

• मुख्य विचार:

 मनुष्य का "स्व" (Self) तीन भागों में बंटा होता है:

- | |
|---|
| 1 |
|---|

 भौतिक आत्म (Material Self): शरीर, वस्त्र, संपत्ति आदि।
- | |
|---|
| 2 |
|---|

 सामाजिक आत्म (Social Self): समाज में हमारी पहचान और दूसरों की राय।
- | |
|---|
| 3 |
|---|

 आध्यात्मिक आत्म (Spiritual Self): हमारा आंतरिक अनुभव, विचार और विश्वास।

• उदाहरण:

 भौतिक आत्म: एक व्यक्ति अपनी महंगी घड़ी को अपनी पहचान का हिस्सा मानता है।

 सामाजिक आत्म: एक शिक्षक अपनी पहचान को छात्रों और समाज की राय से जोड़कर देखता है।

 आध्यात्मिक आत्म: ध्यान और आत्मचिंतन करने वाला व्यक्ति खुद को अपनी सोच और आत्मज्ञान से जोड़कर देखता है।

• 5. धार्मिक अनुभवों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

• मुख्य विचार:

 धार्मिक अनुभव व्यक्ति की आंतरिक भावना और मानसिक अवस्था से जुड़े होते हैं।

 इन्हें वैज्ञानिक रूप से समझने का प्रयास किया गया।

 धार्मिक अनुभव सभी के लिए अलग-अलग होते हैं।

• उदाहरण:

 भक्ति: किसी भक्त को मंदिर या मस्जिद में प्रार्थना करने से आध्यात्मिक शांति मिलती है।

 ध्यान: किसी व्यक्ति को ध्यान करते समय ईश्वरीय अनुभूति होती है।

 चमत्कार: कुछ लोग कठिन समय में किसी अदृश्य शक्ति की सहायता

• 6. आदत का महत्व (Importance of Habit)

• मुख्य विचार:

 आदतें हमारे व्यवहार और व्यक्तित्व को नियंत्रित करती

 अच्छी आदतें सफलता और सुखद जीवन का आधार होती

 बार-बार दोहराए गए कार्य स्वचालित (automatic) हो जाते हैं।

• उदाहरण:

 अच्छी आदत: रोज सुबह जल्दी उठना और व्यायाम करना, जिससे शरीर स्वस्थ रहता है।

 बुरी आदत: बार-बार टालमटोल करना, जिससे लक्ष्य प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

 सीखने की प्रक्रिया: साइकिल चलाना सीखने के बाद, यह एक स्वाभाविक क्रिया

7: इच्छा और स्वतंत्रता का सिद्धांत (Theory of Will and Free Will)



-  **मुख्य विचार:**

-  मनुष्य की **इच्छाशक्ति** उसे अपने कार्यों और निर्णयों को नियंत्रित करने की स्वतंत्रता देती है।

-  सही निर्णय लेने के लिए व्यक्ति को **सचेत प्रयास** करना पड़ता है।

-  इच्छाशक्ति हमारे व्यक्तित्व और सफलता को प्रभावित करती है।

-  **उदाहरण:**

-  **एक छात्र:** परीक्षा में अच्छा करने के लिए सोशल मीडिया से दूर रहकर पढ़ाई करता है।

-  **एक खिलाड़ी:** कठिन प्रशिक्षण से गुजरकर अपने खेल में उत्कृष्टता प्राप्त करता है।

-  **स्वास्थ्य:** कोई व्यक्ति जंक फूड छोड़कर स्वस्थ जीवनशैली अपनाता है।

- 8: सत्य का व्यावहारिक सिद्धांत (Practical Theory of Truth) 

-  मुख्य विचार:

-  सत्य को उसकी उपयोगिता और परिणामों के आधार पर परखा जाना चाहिए।

-  यदि कोई विचार व्यावहारिक रूप से कारगर है, तो वह सत्य माना जाता है।

-  सत्य स्थिर नहीं होता, वह अनुभव और आवश्यकताओं के अनुसार बदल सकता है।

-  उदाहरण:

-  विज्ञान: नए शोध पुराने सिद्धांतों को बदल सकते हैं, क्योंकि सत्य नई खोजों पर निर्भर करता है।

-  शिक्षा: एक शिक्षण पद्धति सही है या नहीं, यह उसके प्रभाव पर निर्भर करता है।

-  नैतिकता: एक नैतिक मूल्य समाज के अनुसार अलग-अलग हो सकता है, लेकिन अगर वह अच्छा परिणाम देता है, तो वह सत्य माना जाएगा।

: आलोचनात्मक दृष्टिकोण

- **✗ व्यवहारवाद (Pragmatism)** सत्य को सापेक्ष (relative) बना देता है, जिससे सार्वभौमिक सत्य निर्धारित करना कठिन हो जाता है।
- **✗ James-Lange भावना सिद्धांत** को अपूर्ण माना गया, क्योंकि भावनाएं केवल शारीरिक प्रतिक्रियाओं से नहीं बनतीं, बल्कि मानसिक प्रक्रियाएं भी इसमें भूमिका निभाती हैं।
- **✗ चेतना की धारा (Stream of Consciousness)** को वैज्ञानिक रूप से मापना कठिन है, क्योंकि यह व्यक्तिपरक (subjective) अनुभवों पर आधारित है।
- **✗ धार्मिक अनुभवों** को वैज्ञानिक प्रमाणों के आधार पर सिद्ध करना चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि वे व्यक्तिगत और सांस्कृतिक प्रभावों से प्रभावित होते हैं।
- **✗ स्व-चेतना का सिद्धांत** में आत्म (Self) को तीन भागों में बांटने को लेकर मतभेद हैं, क्योंकि यह जटिल और व्याख्या-योग्य अवधारणा है।
- **✗ आदत का महत्व (Habit Theory)** में यह स्पष्ट नहीं है कि व्यक्ति की आदतें आंतरिक इच्छाशक्ति से बनती हैं या बाहरी परिस्थितियों से प्रभावित होती हैं।
- **✗ सत्य का व्यावहारिक सिद्धांत** की आलोचना यह है कि केवल उपयोगिता के आधार पर सत्य को परिभाषित करने से तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण कमजोर हो सकता है।

- : विलियम जेम्स के विचारों की वर्तमान स्थिति 
- **Pragmatism** आज भी शिक्षा, व्यवसाय और निर्णय-निर्माण में उपयोग किया जाता है, विशेष रूप से व्यावहारिक मनोविज्ञान और प्रबंधन में।
- **James-Lange भावना सिद्धांत** को पूरी तरह खारिज नहीं किया गया, बल्कि आधुनिक न्यूरोसाइंस और जैविक मनोविज्ञान में इसे भावनाओं की उत्पत्ति को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार माना जाता है।
- **चेतना की धारा (Stream of Consciousness)** आज भी साहित्य और मनोविज्ञान में एक प्रभावशाली विचार है, विशेष रूप से उपन्यास लेखन में।
- **धार्मिक अनुभवों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन** आज भी जारी है, और कई शोध धार्मिकता और मानसिक स्वास्थ्य के संबंध को समझने का प्रयास कर रहे हैं।
- **स्व-चेतना का सिद्धांत (Theory of Self-Consciousness)** आधुनिक व्यक्तित्व मनोविज्ञान और सामाजिक मनोविज्ञान में "आत्म-अवधारणा (Self-Concept)" की समझ को बेहतर बनाने में सहायक है।
- **आदत का महत्व (Habit Theory)** न्यूरोसाइंस और व्यावहारिक अर्थशास्त्र में आदतों के निर्माण और बदलाव को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण विषय बना हुआ है।
- **सत्य का व्यावहारिक सिद्धांत** दार्शनिक बहसों में आज भी चर्चा का विषय है, विशेष रूप से विज्ञान, नैतिकता और नीति-निर्माण में।

• निष्कर्ष

-  विलियम जेम्स को आधुनिक मनोविज्ञान और दर्शनशास्त्र के महत्वपूर्ण चिंतकों में गिना जाता है।
-  उनके Pragmatism, Stream of Consciousness, James-Lange Theory, Self-Theory जैसे सिद्धांतों ने मनोविज्ञान, शिक्षा, साहित्य और न्यूरोसाइंस को गहराई से प्रभावित किया।
-  हालांकि उनके कुछ विचारों की आलोचना भी हुई, फिर भी वे आज भी प्रासंगिक हैं और विभिन्न क्षेत्रों में उनके सिद्धांतों पर शोध जारी है।
-  उनकी सोच ने व्यावहारिकता, भावनाओं, चेतना, आदतों और आत्म-अवधारणा को समझने के नए रास्ते खोले।
-  अंततः, विलियम जेम्स का योगदान आधुनिक मनोविज्ञान की नींव रखने में अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है।

शुभकामनाएँ!



• Thank you

साभार

Google images

Chatgpt

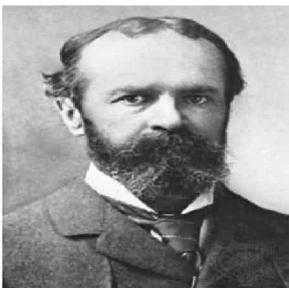
Microsoft copilot 365

बाक्स 2.4 : आधुनिक मनोविज्ञान का संस्थापक (प्रणेता) कौन है?

मनोविज्ञान के इतिहास में हमेशा यह तर्क सार्थक रहा है कि आखिरकार आधुनिक मनोविज्ञान का असली संस्थापक किसे माना जाना चाहिए। जो बिल्कुल सही नाम जो आता है वह है, विलहम वुण्ट। वुण्ट ने प्रथम मनोविज्ञान की प्रयोगशाला को स्थापित किया, जिसके कारण मनोविज्ञान एक स्वतंत्र शैक्षिक विषय बन गया। हालांकि यह तर्क दिया गया कि वुण्ट के लिए ऐसा करना संभव नहीं हो सकता था, यदि वुण्ट से पूर्व हेल्महोल्ट्ज एवं फेकनर ने महत्वपूर्ण योगदान नहीं दिया होता।

वुण्ट हेल्महोल्ट्ज और फेकनर दोनों से सीधे-सीधे प्रभावित थे। उन्होंने हीडलबर्ग विश्वविद्यालय में हेल्महोल्ट्ज के लिए सहायक का कार्य किया। हेल्महोल्ट्ज का कार्य वुण्ट के लिए अपने विचारों को विकसित करने का आधार बना। यह सुझाव दिया गया कि यह हेल्महोल्ट्ज के लिए नहीं था, वुण्ट एक नए, वैज्ञानिक मनोविज्ञान के विचारों के साथ आगे नहीं बढ़ पायेगा। इस अवलोकन को ध्यान में रखते हुए आधुनिक मनोविज्ञान का संस्थापक हेल्महोल्ट्ज को होना चाहिए न कि वुण्ट को। हेल्महोल्ट्ज से प्रभावित होने के अलावा वुण्ट ने फेकनर द्वारा उपयोग की गयी बहुत सी विधियों को अपने प्रयोगों में अपनाया। वास्तव में वुण्ट ने दावा किया था कि फेकनर की पुस्तक 'एलिमेंट्स ऑफ साइकोफिजिक्स (1860) ने मनोविज्ञान में प्रायोगिक पद्धति शुरू करने के लिए प्रारंभिक बल दिया था।

वुण्ट के शिष्य टिचनर ने फेकनर को प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का जनक माना है। यह मानते हुए कि यह मनोविज्ञान में प्रायोगिक पद्धति की शुरुआत थी जिसने इसे शैक्षिक विषय बनाया, इसलिए आधुनिक मनोविज्ञान के संस्थापक के रूप फेकनर को होना चाहिए। मनोविज्ञान में हेल्महोल्ट्ज एवं फेकनर का योगदान निर्विवाद है। हालांकि उन्होंने कभी भी एक नये विज्ञान को विकसित करने या मनोविज्ञान को एक स्वतंत्र शाखा या विषय बनाने का इरादा नहीं किया। दूसरी ओर वुण्ट था, जिसने नये मनोविज्ञान को स्थापित करने में बहुत ही उत्तम प्रयास किये जो कि प्रकृति में प्रयोगात्मक थी। वुण्ट ने वैज्ञानिक मनोविज्ञान के विचार को प्रगति देने के लिए अथक प्रयास किए, उन्होंने इसकी उन्नति के लिए अपने लेखों एवं व्याख्यानों का उपयोग किया। इस सम्बंध में यह सत्य है कि वुण्ट, जिसे वास्तव में आधुनिक मनोविज्ञान का जनक माना जाता है। इसके बावजूद हेल्महोल्ट्ज एवं फेकनर के सार्थक योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, यह भी सुझाव दिया गया कि हेल्महोल्ट्ज, फेकनर एवं वुण्ट को आधुनिक मनोविज्ञान का संयुक्त संस्थापक माना गया है।



चित्र 2.4 : विलियम जेम्स
(1842-1910)

स्रोत : www.britannica.com

2.4 विलियम जेम्स

जब विलहम वुण्ट जर्मनी में एक वैज्ञानिक विषय के रूप में मनोविज्ञान को स्थापित करने के लिए परिश्रम से कार्य कर रहे थे, विलियम जेम्स (1842-1910), जिन्हें अमेरिकी मनोविज्ञान के जनक के रूप में जाना जाता है, अमेरिका में अपने विचारों का प्रचार कर रहे थे। जेम्स, जो अब तक के सबसे महान मनोवैज्ञानिकों में से एक थे, मनोविज्ञान को एक विज्ञान बनाना चाहते थे, लेकिन उनके विचार मनोविज्ञान को पूरी तरह से अलग दिशा में ले जा रहे थे, जैसा कि वुण्ट ने सोचा था।

जेम्स ने इस बात पर आपत्ति जताई थी कि वुण्ट का मानना है कि तत्वों में चेतना का विश्लेषण मनोविज्ञान का लक्ष्य होना चाहिए। उन्होंने चेतना का अध्ययन करने का एक वैकल्पिक तरीका भी प्रदान किया, एक दृष्टिकोण जो कार्यात्मक मनोविज्ञान शाखा के अनुरूप था। यद्यपि जेम्स ने मनोविज्ञान की एक औपचारिक प्रणाली स्थापित नहीं की या उसके अधीन किसी भी शिष्य को प्रशिक्षित नहीं किया, लेकिन मनोविज्ञान के विकास, विशेष रूप से कार्यात्मकता के क्षेत्र में उनके योगदान को महत्वपूर्ण एवं व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है। कार्यात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र में उन्होंने जो विचार प्रस्तुत किए हैं, वे मनोवैज्ञानिकों को बाद की पीढ़ियों को प्रेरित करते हैं और इस प्रकार कार्यात्मकता के क्षेत्र को प्रेरित करते हैं।

2.4.1 मनोविज्ञान के नियम

उनकी उत्कृष्ट पुस्तक *द प्रिंसिपल्स ऑफ साइकोलॉजी* (1860) में, जेम्स ने तर्क दिया कि मनोविज्ञान को अनुभव तत्वों से आगे बढ़ना चाहिए एवं अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए कि लोग अपने पर्यावरण के अनुकूल कैसे हो। यह मानसिक प्रक्रियाओं की उपयोगिता पर ध्यान केन्द्रित करने में मदद करता है जो कि उनके पर्यावरण को अनुकूल बनाने में मदद करता है। फिर इसके अलावा जेम्स ने मानव प्रकृति के गैर-तर्कसंगत पक्ष को पहचाना। उन्होंने स्वीकार किया कि मानव और उसका व्यवहार न केवल विचार एवं तर्क से प्रभावित होते हैं, बल्कि भावनाओं एवं उत्साह से भी प्रभावित होते हैं। उन्होंने कहा कि न केवल ये, बल्कि मानव शरीर की शारीरिक स्थिति भी काफी हद तक बौद्धिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करती है। जेम्स के यथार्थ योगदानों को जो उन्होंने मनोविज्ञान के क्षेत्र में किया उनकी उत्कृष्ट पुस्तक *द प्रिंसिपल्स ऑफ साइकोलॉजी* द्वारा प्रदर्शित होता है। इस पुस्तक के प्रकाशन को मनोविज्ञान में कार्यात्मक (व्यवहारवाद) आन्दोलन की शुरुआत के लिए प्रमुख अग्रदूत माना जाता है।

2.4.2 चेतना

अपनी पुस्तक *प्रिंसिपल्स ऑफ साइकोलॉजी* में, जेम्स ने सुझाव दिया कि मनोविज्ञान दोनों घटनाओं एवं स्थितियों के मानसिक जीवन का विज्ञान है। इस प्रकार जेम्स के दृष्टिकोण से देखते हुए मनोविज्ञान विषय के लिए दो शब्द महत्वपूर्ण हो जाते हैं—घटना एवं स्थिति। जबकि पूर्व मनोविज्ञान तत्काल अनुभवों की ओर इशारा करता है बाद वाले की भूमिका को उजागर करता है, विशेष रूप से मस्तिष्क एवं मानसिक जीवन।

जेम्स ने वुण्ट एवं चेतन के अध्ययन के लिए उनके दृष्टिकोण का विरोध किया और तर्क दिया कि यह बहुत कृत्रिम एवं संकीर्ण था। जेम्स इस धारणा से सहमत नहीं थे कि चेतन अनुभव छोटे तत्वों से मिलकर बना होता है। उनका विचार था कि मनोवैज्ञानिकों को अपनी प्राकृतिक परिस्थिति-भौतिक मानव में चेतन का अध्ययन करना चाहिए। भौतिक शरीर (मस्तिष्क) और चेतन अनुभवों में इसकी भूमिका का समावेश, जेम्स के दृष्टिकोण का एक विशिष्ट पहलू था।

जेम्स ने आगे तर्क दिया कि अंतर्निरीक्षण के माध्यम से खोजे गए चेतन के असतत् तत्व एक प्रशिक्षित पर्यवेक्षक के बाहर मौजूद नहीं हैं। दूसरे शब्दों में, सिर्फ इसलिए कि प्रशिक्षित पर्यवेक्षक एक प्रयोगशाला वातावरण में छोटे तत्वों के संदर्भ में अपने चेतन अनुभवों का विश्लेषण करने में सक्षम हैं, इसका मतलब यह है कि ये तत्व किसी

अन्य व्यक्ति की चेतना में भी मौजूद हैं जो उसी के अनुभव के सम्पर्क में हैं। यह प्रत्यक्षण कि सभी व्यक्तियों में समान तत्व समान चेतन अनुभव बनाते हैं, जिसे जेम्स ने मनोवैज्ञानिकों के पतन के रूप में संदर्भित किया है। मनोविज्ञान के लिए वुण्ट के दृष्टिकोण पर प्रतिक्रिया देते हुए, जेम्स ने कहा कि चेतन अनुभव में सरल संवेदनाएं मौजूद नहीं हैं। वे बल्कि, अनुमान या अमूर्त जैसी प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप उपस्थित हैं।

वुण्ट की तुलना में जेम्स का चेतना अनुभव पर भी अलग दृष्टिकोण था। वह अपने छोटे तत्वों के प्रति चेतन अनुभव के विश्लेषण और कमी के विरोधी थे। वह चेतन को एक सतत् प्रवाह (चेतना की धारा) के रूप में देखता थे, इसलिए जेम्स का मानना था कि इस अस्थायी रूप से असतत् तत्वों में विभाजित करना केवल इसे विकृत करेगा। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि चूंकि चेतन कभी अलग होती है, इसलिए किसी के लिए एक ही अनुभूति या दूसरी बार सोचा जाना संभव नहीं है। भले ही किसी दिए गये उद्दीपन के बारे में एक से अधिक बार सोच सकते हैं, लेकिन दो अवसरों के बीच नए अनुभवों के परिणामस्वरूप, विभिन्न अवसरों पर किसी के विचार भिन्न हो सकते हैं। इस प्रकार चेतन आवर्ती के विपरीत बेहतर संचयी के रूप में वर्णित है।

चेतन के साथ-साथ मन में भी निरंतरता बनी रहती है। चेतन का बहाव सतत् है एवं किसी भी रुकावट या गड़बड़ी से चिन्हित नहीं है। यहां तक कि समय में अन्तराल होते हैं (उदाहरण के लिए सोते समय), जागने पर चेतन की निरंतर धारा के साथ जुड़े रहना आसान होता है।

निरंतरता होने के अलावा, मन चयनात्मक भी है, इस कारण से कि व्यक्तियों के लिए यह संज्ञानात्मक रूप से सम्भव है कि वे किसी भी क्षण अनुभव की जाने वाली सभी वस्तुओं के एक छोटे से हिस्से में भाग ले, मन चुनिंदा रूप से उन सभी उद्दीपकों को चुनता है जो किसी के सम्पर्क में हैं। यह दूसरों के ऊपर कुछ अनुभवों को छांटता है, जोड़ता है, अलग करता है या उन्हें अस्वीकार करता है। दूसरों पर कुछ अनुभवों का चयन करने के लिए मानदण्ड प्रासंगिक है।

इस प्रकार जेम्स ने चेतना की संरचना के बजाय कार्य या उद्देश्य पर अधिक बल दिया। उन्होंने कारण दिया कि चूंकि चेतन समय के साथ जीवित है, इसलिए जीवित जीवों के लिए इसकी उपयोगिता या जैविक उपयोगिता होनी चाहिए। उनका मानना था कि यह उपयोगिता उनके चुनने की अनुमति के द्वारा एक व्यक्ति को उसके वातावरण के समानुकूलित करने में उसकी योग्यता मदद करती है। पसंद की इस धारणा पर विस्तार करते हुए, जेम्स ने *चेतना पसंद* और *आदत* के मध्य अन्तर किया, जिसमें से आदत अनैच्छिक है और इसलिए अचेतन है। एक नई स्थिति का सामना करने हैं पर यह चेतन पसंद का विकल्प है जो सक्रिय बन जाता है।

2.4.3 मनोविज्ञान की विधियाँ

क्योंकि मनोविज्ञान का विषय व्यक्तिगत एवं तत्काल चेतना से सम्बन्धित है, अंतर्निरीक्षण को विलियम जेम्स ने एक महत्वपूर्ण विधि के रूप में स्वीकार किया। यह जेम्स के अंतर्निरीक्षण की स्वीकृति के अलावा था, जैसे “कम-से” की विधि, और साथ ही साथ इसकी उपयोगिता में आने वाली कठिनाइयाँ थी। उपयुक्त जाँच एवं कई पर्यवेक्षकों के साथ तुलना द्वारा निष्कर्षों का सत्यापन महत्वपूर्ण माना जाता था।

अंतर्निरीक्षण के अलावा, जेम्स ने विशेष रूप से मनोभौतिकी, अंतरिक्ष धारणा एवं स्मृति जैसे क्षेत्रों में अनुसंधान के संदर्भ में खुद पर भरोसा किया एवं प्रायोगिक पद्धति पर बल दिया। अंत में तुलनात्मक विधि को मानसिक जीवन में महत्वपूर्ण असमानताओं की खोज के रूप में प्रस्तावित किया गया था। इसमें जानवरों, शिशुओं, भावनात्मक रूप से अस्थिर व्यक्तियों जैसे विभिन्न आबादी से क्षेत्रों व्यवहार या मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करके किया गया था। "प्रिन्सपल्स ऑफ साइकोलॉजी" में जेम्स के इन तरीकों के विवरण ने संरचनावाद और कार्यवाद के बीच एक महत्वपूर्ण कार्यप्रणाली अन्तर पर प्रकाश डाला। जबकि पूर्व में काफी हद तक एक विधि अंतर्निरीक्षण तक सीमित था, कार्यवाद केवल एक विधि तक सीमित नहीं था। बल्कि कार्यवाद ने अंतर्निरीक्षण के अलावा कई अन्य विधियों को लागू करके एक उदार दृष्टिकोण अपनाया। यह अमेरिकी मनोविज्ञान के दायरे को विस्तार करने में मददगार साबित हुआ।

2.4.4 व्यवहारिकतावाद

व्यवहारिकतावाद का विचार सिद्धान्त अथवा अवधारणा के प्रायोगिकता या उपयोगिता पर बल डालता है। मनोविज्ञान में व्यवहारवाद पर बल देते हुए जेम्स का मानना था कि किसी भी मनोवैज्ञानिक विचार या निर्माण की वैधता को इसके वास्तविक-विश्व परिणामों द्वारा परखा जाना चाहिए। व्यावहारिक दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से अभिव्यक्ति में केंद्र है : "कुछ भी सच है अगर यह कार्य करता है"।

2.4.5 संवेग

मूल रूप से यह माना जाता था कि किसी विशेष संवेग का अनुभव उद्दीपन के लिए उनकी शारीरिक प्रतिक्रिया से पहले होता है। उदाहरण के लिए, एक खतरनाक जानवर को देखकर पहले व्यक्ति डर का अनुभव करता है और फिर भाग जाता है, यानि कि खतरनाक जानवर से दूर भागने की शारीरिक प्रतिक्रिया डर के संवेग का अनुभव करने के बाद आता है।

पहली बार 1884 में प्रकाशित जेम्स के संवेग का सिद्धान्त इस दृष्टिकोण के ठीक विपरीत था। जेम्स ने कहा कि उद्दीपन के लिए शारीरिक प्रतिक्रियाएँ संवेग के अनुभव से पहले आती हैं। उनका मानना था जिसे उनका मानना था कि विशेष रूप से उस मामले में सच था जिसे उन्होंने अपरिष्कृत संवेग कहा था (उदाहरण के लिए भय, क्रोध, दुःख, प्रेम) जेम्स के संवेग के सिद्धांत के अनुसार, पूर्व में दिये गये उदाहरण को पुनः लागू किया गया - जैसे ही कोई व्यक्ति खतरनाक जानवर को देखकर विपरीत दिशा में भागता है और डर का अनुभव करता है।

जेम्स ने अंतर्निरीक्षण परीक्षणों के आधार पर अपने सिद्धांत का समर्थन किया कि अगर शारीरिक परिवर्तन जैसे हृदय गति में वृद्धि या मांसपेशियों में तनाव का अनुभव नहीं होता है, तब संवेग का अनुभव भी नहीं होगा, विवाद उत्पन्न होने के बावजूद भी संवेग पर जेम्स के कार्य ने क्षेत्र में महत्वपूर्ण अनुसंधानिक विकास को बढ़ावा दिया।

2.4.6 आत्म के तीन खंड

अपने स्वयं के कार्य में जेम्स ने तीन घटकों का वर्णन किया, जो एक व्यक्ति को स्वयं की भावना से अभिभूत करते हैं - भौतिक स्वयं, सामाजिक स्वयं, और आध्यात्मिक

स्वयं। भौतिक स्वयं से तात्पर्य उन वस्तुओं से है जो विशिष्ट रूप से किसी का अपनत्व है, उदाहरण के लिए किसी का शरीर, परिवार घर, रहन सहन की शैली इत्यादि। इनमें से जेम्स का विश्वास था कि किसी को कपड़ों की पसंद उसके लिए महत्वपूर्ण थी। सामाजिक स्वयं उसके आसपास के लोगों से प्राप्त व्यक्तिगत पहचान को संदर्भित करता है। जेम्स की भावना थी कि चूँकि लोग खुद को अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग पेश करते हैं (जैसे लोग माता-पिता, शिक्षकों, मित्रों और प्रेमियों की उपस्थिति में अलग-अलग व्यवहार करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न प्रकार के सामाजिक स्वयं होते हैं। अन्ततः जेम्स ने आध्यात्मिक स्वयं को हमारे व्यक्तिपरक होने के रूप में संदर्भित किया है।

2.4.7 आदत

जेम्स ने जीवित जीवों को आदत का एक पुलिंदा के रूप में संदर्भित किया है। क्योंकि दोहराए जाने वाले कार्यों में तन्त्रिका तन्त्र शामिल होता है और इसकी नमनीयता भी बढ़ जाती है, पुनरावृत्ति पर कुछ व्यवहारों में संलग्न होने के लिए आवश्यक चेतन प्रयास में कमी होती है। आदतें समय के साथ आसानी से प्रदर्शित हो जाती हैं या आसान हो जाती हैं।

बाक्स 2.5: विलियम जेम्स

विलियम जेम्स के कार्य को यूरोपीय मनोविज्ञान से अमेरिकन मनोविज्ञान में बदलाव के विषय में बताया गया है। उनका इरादा एक विचार के शाखा को विकसित करना नहीं था लेकिन उनका विचार प्रकार्यवाद के सम्प्रदाय को विकसित करना था। जेम्स ने विकासवादी सिद्धान्त को मनोविज्ञान में शामिल किया। विचारों की उपयोगिता एवं व्यावहारिकता पर बल देते हुए, उन्होंने शुद्ध मनोविज्ञान से एक प्रमुख प्रस्थान का प्रतिनिधित्व किया, जिस पर वुण्ट एवं टिचनर ने बल दिया था। जेम्स के अनुसार, यह उपयोगिता है जो सही एवं मूल्य को परिभाषित करती है। यह उसको प्रयुक्त मनोविज्ञान का अग्रदूत भी बनाती है।

जेम्स ने मनोविज्ञान में शोध तकनीकों को बढ़ावा दिया। उन्होंने स्वीकार किया कि न केवल अंतर्निरीक्षण विधि बल्कि किसी भी तकनीक के उपयोग का सुझाव दिया जो मन और व्यवहार को समझने में उपयोगी जानकारी प्रदान करती है। उन्होंने मानव के समस्त पहलुओं का अध्ययन करने पर भी जोर दिया, जिसमें व्यवहार, अनुभूति, संवेग, महत्वाकांक्षा आदि शामिल हैं। ऐसा करके जेम्स ने मनोविज्ञान के विषय को व्यापक बनाया। जेम्स की उदारता को उत्तम आधुनिकतावादी आंदोलन के अनुसार माना जाता है।

उनके बाद के व्यवसाय में, जेम्स ने मनोविज्ञान में अपनी रुचि को खो दिया, और अपने बचे शेष जीवन को दर्शनशास्त्र के लिए समर्पित कर दिया, जो मनोविज्ञान के क्षेत्र में योगदान देने से पूर्व उनका महत्वपूर्ण रुचिकर क्षेत्र था।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 2

1) वुण्ट ने चेतना के तत्वों के संगठन को किस प्रकार से वर्णित किया है?

.....